सुनियो बानी सोहागनी

सुनियो बानी सोहागनी, हुती जो अकथ अगम।
सो बीतक कहूँ तुमको, उड़ जासी सब भरम।।

तू कौन आई इत क्योंकर, कहां हैं तेरा वतन।
नार तू कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।।

ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रहयो अंत्रीख।
कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत।।

ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों न छूटे बंध।
या विध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध।।

निज बुध आवे अग्याएँ, तोलों न छूटे मोह।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल न होए।।

ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रश्न।
कहूँ और अजूं बोहोत हैं, वे भी सुनो वचन।।